IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शेरशाह सूरी की शासन व्यवस्था एवं नीतियाँ

अनामिका कुमारी

एम.ए., यू.जी.सी. नेट (इतिहास)

असिस्टेन्ट प्रोफेसर (अतिथि)

एस. एल. के. कॉलेज, सीतामढ़ी

बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

सार–संक्षेप :

शेरशाह सूर या सूरी के नाम से जाना जाता है, का वास्तविक नाम फरीद था। उसके पूर्वज अफगानिस्तान के रोह क्षेत्र के थे जो कि गोमल नदी के किनारे सुलेमान की पहाड़ियों में स्थित था। उसके पिता हसन और बाबा इब्राहीम सूर बहलोल लोदी के राज्य में जीविका की तलाश में भारत आए थे। हसन पंजाब में होशियारपुर के पास बजवारा में आकर बस गया और उसने एक हिन्दू जमींदार रायमल के यहाँ नौकरी कर ली। बाद में वह हिसार फिरोजा के जमाल खान के यहाँ नौकरी करने चला गया। शेरशाह की 5 वर्षों की सबसे बड़ी उपलब्धि उसका शासन प्रबन्ध है जिसके कारण उसे अकबर का अग्रगामी माना जाता है। इस शासन प्रबन्ध की जानकारी समकालीन इतिहासकार अब्बास खा सरवानी की पुस्तक तारीखे शेरशाही से मिलती है परन्तु शेरशाह को बुलन्दियों पर पहुँचाने का कार्य एक आधुनिक इतिहासकार के.आर. कानूनगों एवं उनकी शोधों को जाता है। उन्होंने अपनी पुस्तक "Shershah and his period" में शेरशाह को किसी नई प्रशासनिक व्यवस्था को प्रारम्भ करने का श्रेय नहीं दिया बल्कि पुरानी व्यवस्था को नये से लागू करने का श्रेय दिया।

शब्द कुंजी : जीविका, शासन प्रबन्ध, जमींदारी, आधुनिक इतिहासकार

प्रस्तावना

शेरखान जिसे शेरशाह सूर या सूरी के नाम से जाना जाता है, का वास्तविक नाम फरीद था। उसके पूर्वज अफगानिस्तान के रोह क्षेत्र के थे जो कि गोमल नदी के किनारे सुलेमान की पहाड़ियों में स्थित था। उसके पिता हसन और बाबा इब्राहीम सूर बहलोल लोदी के राज्य में जीविका की तलाश में भारत आए थे। हसन पंजाब में होशियारपुर के पास बजवारा में आकर बस गया और उसने एक हिन्दू जमींदार रायमल के यहाँ नौकरी कर ली। बाद में वह हिसार फिरोजा के जमाल खान के यहाँ नौकरी करने चला गया। एक मत के

अनुसार फरीद का जन्म सन् 1472 ई0 में बजवारा में हुआ, लेकिन कानूनगो के मतानुसार ऐसे तथ्य मिलते हैं जिनसे सिद्ध होता है कि फरीद का जन्म हिसार फिरोजा में सन् 1486 ई0 में हुआ, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि फरीद का जन्म सुल्तान बहलोल लोदी के शासन काल 1450–88 में हुआ। हिसार फिरोजा से जमाल खान को सुल्तान सिकन्दर लोदी ने जौनपुर के फौजदार पद पर पदोन्नत कर दक्षिण बिहार को स्थानान्तरित कर दिया और वह अपने साथ हसन को भी ले गया तथा जमाल खान के कहने पर सुल्तान ने उसे (हसन को) तीन गाँवों–इब्बासपुर, सहसराम और हाजीपुर टाण्डा की जागीर का कार्यभार सौंप दिया। फरीद ने अपनी यौवन गंगा नदी की सहायक नदी सोन नदी के किनारे स्थित सुन्दर भू–भाग सहसराम में बिताया। उसकी प्रारम्भिक शिक्षा जौनपुर में हुई। बाद में उसके पिता ने उसे बिहार के शासक बहार खाँ लोहानी के यहाँ नौकरी दिलवा दी। वहीं एक शेर को मारने के कारण बहार खाँ ने उसे शेरखाँ की उपाधि दी। फिर चौसा के युद्ध में विजय के बाद उसने शेरशाह की उपाधि धारण की फिर कन्नौज के युद्ध में विजय के बाद वह दिल्ली व भारत का शासक बन बैठा तथा द्वितीय अफगान शक्ति का संस्थापक हुआ।

गक्कर प्रदेश की विजय (1541)

पंजाब में झेलम व सिन्धु नदी के उत्तर में गक्कर क्षेत्र था यहाँ के रहने वाले गक्करी लूट–पाट करते थे। अतः शेरशाह सूरी ने उनके विरुद्ध अभियान किया। उनके विद्रोह को पूरी तरह समाप्त तो नहीं किया जा सका। परन्तु इन विद्रोहों को रोकने के लिए झेलम के तट पर रोहतासगढ़ दुर्ग का निर्माण करवाया।

बंगाल विद्रोह का दमन और नई प्रशासनिक व्यवस्था (1511)

बंगाल की दूरी दिल्ली से अधिक होने के कारण यहाँ अक्सर विद्रोह होते रहते थे। 1541 में बंगाल के सूबेदार खिज्र खाँ के विद्रोह को दबाने के बाद यहाँ के विद्रोहों को रोकने के लिए शेरशाह ने एक नई प्रशासनिक व्यवस्था की शुरुआत की। उसने सम्पूर्ण बंगाल को 19 सरकारों (जिलों) में विभाजित कर दिया। प्रत्येक जिले में 2 प्रकार के अधिकारी शिकदार–ए–शिकदारान व मुसिफ–ए–मुंसिफान की नियुक्ति की। इनके ऊपर एक गैर सैनिक अधिकारी अमीन–ए–बंगला की नियुक्ति की गई। यह पद सर्वप्रथम काजी फजियात को दिया गया।

मालवां विजय (1542)

गुजरात के शासक बहादुर शाह की मृत्यु के बाद मालवां के सूबेदार मल्लू खाँ ने स्वयं को कादिर शाह के नाम से स्वतंत्र शासक घोषित किया। शेरशाह ने अभियान कर इसे पराजित किया और वहाँ पर सुजात खाँ की नियुक्ति की।

रायसेन विजय (1543)

मालवाँ में स्थित रायसेन के किले पर एक राजपूत पूरनमल का अधिकार था। लगभग 6 महीने के घेरे के बाद जब शेरशाह इस किले की विजय नही कर पाया तब उसने बातचीत के लिए किले द्वार खुलवाया और फिर इसकी विजय कर ली। इस प्रकार शेरशाह की यह विजय विश्वासघात से की गई विजय मानी जाती है। उसकी उपलब्धियों पर एक धब्बा भी है।

मारवाड़ की विजय (1544)

मारवाड़ के राजूपत प्रतापी शासक मालदेव को शेरशाह ने संभल के प्रसिद्ध युद्ध में पराजित किया। यह विजय काफी मुश्किल से मिली थी। इसीलिए विजय के बाद उसने कहाँ कि मैंने मुठ्ठी भर बाजरे के लिए हिन्दुस्तान की सल्तनत खतरे में डाल दी थी।

कालिंजर विजय (1545)

यहाँ का शासक कीरत सिंह था। बाँदा जिले में स्थित कालिंजर अभियान शेरशाह का अन्तिम अभियान था वह स्वयं उक्का नाम आनयस्त चला रहा था। किले की विजय लगभग पूर्ण हो चुकी थी तभी एक गोला उसके पास आकर गिरा गोले के फटने और चोट लगने से अन्ततः उसकी मृत्यु हो गई। उसके अन्तिम शब्द थे ''खुदा की दया है कि यह मेरी अन्तिम इच्छा थी''।

शेरशाह की मृत्यु के बाद बिहार के सहसाराम स्थित उसके मकबरे में उसे दफना दिया गया।

शेरशाह का शासन–प्रबन्ध

शेरशाह की 5 वर्षों की सबसे बड़ी उपलब्धि उसका शासन प्रबन्ध है जिसके कारण उसे अकबर का अग्रगामी माना जाता है। इस शासन प्रबन्ध की जानकारी समकालीन इतिहासकार अब्बास खा सरवानी की पुस्तक तारीखे शेरशाही से मिलती है परन्तु शेरशाह को बुलन्दियों पर पहुँचाने का कार्य एक आधुनिक इतिहासकार के.आर. कानूनगों एवं उनकी शोधों को जाता है। उन्होंने अपनी पुस्तक "Shershah and his period" में शेरशाह को किसी नई प्रशासनिक व्यवस्था को प्रारम्भ करने का श्रेय नहीं दिया बल्कि पुरानी व्यवस्था को नये से लागू करने का श्रेय दिया। शेरशाह के शासन प्रबन्ध में एक सचिवालय का उल्लेख मिलता है जिसमें 4 महत्वपूर्ण केन्द्रीय विभाग थे :–

1. दीवाने बजारत– राजस्व विभाग ।
2. दीवाने अर्ज– सैन्य विभाग।
3. दीवाने रसातल– विदेश विभाग ।
4. दीवाने इंसा– पत्राचार विभाग।

केन्द्र प्रान्तों में विभाजित था जिसे सूबा कहा गया इसका प्रमुख सूबेदार/फौजदार था। सूबे जिलों में विभाजित थे जिसे सरकार कहाँ गया। शेरशाह के समय उसके राज्य में कुल 66 जिले थे। जिसमें से अकेले 19 जिले बंगाल में थे इन जिले में मुख्यता 2 प्रकार के अधिकारियों शिकदार–ए–शिकदारान व मुंसिक–ए–मुंसिफान की नियुक्ति की जाती थी। इसमें शिकदार–ए–शिकदारान प्रशासनिक व्यवस्था से और मुंसिफ–ए–मुंसिफान राजस्व व्यवस्था से सम्बन्धित था। सरकार

परगना/तहसील में विभाजित थे यहाँ 2 अधिकारियों शिकरार व मुंसिफ की नियुक्ति की जाती थी। प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी यहाँ तीन प्रकार के अधिकारी थे।

1. सूत–जमींदार।
2. मुक़ददम–मुखिया।
3. चौधरी–भूराजस्व वसूलने वाला अधिकारी।

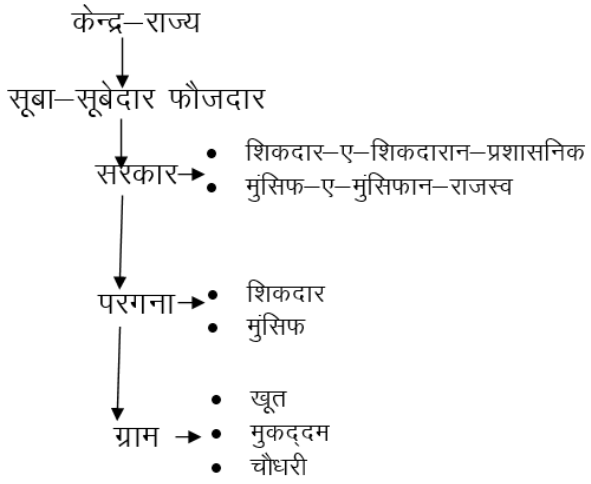

शेरशाह की भू–राजस्व व्यवस्था

शेरशाह की 5 वर्षों की सबसे बड़ी उपलब्धि उसकी भू–राजस्व व्यवस्था थी जिसके कारण उसे वास्तविक रुप में अकबर का अग्रगामी माना जाता है। शेरशाह ने समस्त भूमि की माप गज–ए–सिकन्दरी से करवायी जिसमें 39 खाने थे। भूमि की माप के बाद तीन भागों उत्तम, मध्यम व निम्न में विभाजित किया। प्रत्येक प्रकार की भूमि में खरीफ व रबी की फसलों को भी अनुमान में शामिल किया। इसके औसत उपज का 1/3 भाग भूराजस्व के रुप में लिया गया। जबकि मुल्तान में इसकी मात्रा 1/4 थी। पहली बार फसलों को भूराजस्व के निर्धारण का आधार बनाये जाने को कहा गया। भूमि की सर्वेक्षण के लिए एक सर्वेक्षण शुल्क ज़रीबाना 2.5 प्रतिशत लिया गया। जबकि कर संग्रह शुल्क मुहासिलाना 5 प्रतिशत लिया गया। प्रत्येक किसान को एक कबूलियत अर्थात् पट्टा दिया जाता था जिसमें उसके भूमि के प्रकार और भूराजस्व की मात्रा आदि का उल्लेख होता था। इस प्रकार शेरशाह ने कबूलियतनामा के माध्यम से सीधे कृषकों से सम्बन्ध स्थापित किया।

अन्य उपलब्धियाँ

1. शेरशाह ने 1700 सरायों का निर्माण करवाया जिसमें हिन्दुओं व मुस्लिमों को ठहरने की अलग–अलग व मुफ्त व्यवस्था होती थी। के0आर0 कानूनगों ने इन सरायों को साम्राज्य के धमनियों की संज्ञा दी। जिससे शिथिल साम्राज्य में रक्त संचार होता था।

2. सड़को का निर्माण–शेरशाह को अनेक सड़कों के निर्माण का श्रेय दिया जाता है इसमें एक सड़क आगरा से मांडू, आगरा से चिलौरा व लाहौर से मुल्तान को जोड़ने वाली सड़कों का निर्माण करवाया। परन्तु उसके द्वारा निर्मित सबसे बड़ी सड़क बंगाल के सोनार गाँव को सिन्ध से जोड़ती थी जिसे उसके समय में शेरशाह सूरी मार्ग या सड़क–ए–आजम कहा गया। आगे चलकर ब्रिटिश जनरल गर्वनर लार्ड ऑक्लैण्ड ने इसे जी0टी0 रोड नाम दिया।

मुद्रा व्यवस्था में सुधार– शेरशाह ने शुद्ध अरबी सिक्के के अतिरिक्त टकसाल का नाम भी लिखा होता था।

अशरफ–स्वर्ण सिक्के।

रुपया–चाँदी का सिक्का

दाम–ताँबे का सिक्का

शेरशाह के समय में रुपया व दाम के बीच अनुपात 1:64 या जबकि अकबर के समय में यह 1:40 हो गया।

सैन्य सुधार

अलाउद्दीन के बाद शेरशाह दूसरा शासक था जिसने सैनिकों का हुलिया रखने, घोड़ों को दागने व सैनिकों को नगद वेतन देने की शुरुआत की।

निर्माण कार्य

शेरशाह की रूचि निर्माण कार्यों में भी थी। उसने दीनपनाह को तोड़कर, पुराना किला का निर्माण करवाया और उसके अन्दर किला–ए–कुहना मजिस्द तथा शेरमण्डल नामक पुस्तकालय बनवाया। उसने पाटलीपुत्र को पटना नाम दिया तथा बिहार के सासाराम में एक झील के अन्दर ऊँचे चबूतरें पर अपना मकबरा बनवाया। शेरशाह ने कैथी लिपि को आधिकारिक दर्जा प्रदान किया। उसी के समय में जायसी ने पद्मावत लिखी। शेरशाह के काल में ही सर्वप्रथम टोडरमल का उल्लेख मिलता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शेरशाह की नीतियाँ आज भी काफी उपयोगी है।

सन्दर्भ

[1] सतीश चन्द्रा – मेडिकल इण्डिया 3 फ्राम सल्तनत टू द मुगल, हर आनन्द प्रकाशन, 2007

[2] डिर्क केलियर – द ग्रेट मुगल एण्ड दीयर इण्डिया, हे हाउस प्रकाशन, 2017

[3] विलियम डार्किम्पल – द लास्ट मुगल

[4] आर्थर अली – मुगन इण्डियाः स्टडीज इन पॉलिसी, आडियॉज, सोसाइटी एण्ड कल्चर, ओ0यू0वी0 इण्डिया प्रकाशन, 2008

[5] आन्द्रे ट्रस्की – औरंगजेबः द मैन एण्ड द मिथ, पेग्विंन रैडंम हाउस इण्डिया प्रकाशन, 2017

[6] एस0आर0 शर्मा – मुगल इम्पायर इन इण्डिया, रीड बुक्स प्रकाशन, 2007

[7] शिरीज मुस्वी – पीपुल, टैक्सेशन एण्ड ट्रेड इन मुगल इण्डिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस प्रकाशन, 2007

[8] वसुधा डालमिया – रिलिजियस इन्ट्रक्वेशन इन मुगल इण्डिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस प्रकाशन, 2014

.